स्वेच्छा – दैनिक जीवन का आधार

यदि हम दैनिक जीवन के आधार पर विचार करें तो हम एक आश्चर्यजनक परिणाम पर पहुँचेंगे। विश्व के किसी भी स्थान पर अथवा किसी भी समय "दैनिक जीवन" से क्या अभिप्राय है?

ज़ाहिर है कि किसी भी क्षण में व्यक्ति जिस स्थिति से गुज़रता है, वहीं से इसका प्रारंभ होता है। किसी भी स्थिति में जो भी कदम हम उठाते हैं, साफ़ तौर पर उसका अर्थ यही निकाला जा सकता है कि हम उस पल क्या चाहते है, और उसे पाने के लिए जैसा हम सोचते है वैसा ही करते हैं।

दैनिक जीवन का यही आधार है जो कि हर व्यक्ति पर हर समय लागू होता है, चाहे वह आज के आप और मैं हों अथवा हज़ारों वर्ष पूर्व गुफ़ाओं में रहने वाले व्यक्ति हों।

भले ही परिस्थितियां बिल्कुल अलग हों, परंतु दैनिक जीवन से अभिप्राय किसी भी परिस्थिति में वही करना है जिसे करने में व्यक्ति विश्वास करता है।

The_Buddha_Sword_Hindi_FB_2016.indd 9 4/7/2016 12:38:31 PM

जैसा कि हम दैनिक जीवन के बारे में जानते हैं कि यह घटित ही इसलिए होता है क्योंकि व्यक्ति में किसी भी परिस्थिति में उसकी सोच के अनुसार कुछ भी करने की स्वेच्छा होती है। इसलिए यह पूछना व्यर्थ है कि क्या मनुष्यों के पास स्वेच्छा होती है? यदि ऐसा नहीं होता तो दैनिक जीवन घटित नहीं होता।

The_Buddha_Sword_Hindi_FB_2016.indd 10 4/7/2016 12:38:31 PM

स्वेच्छा का सिद्धांत – व्यवहार में

यदि हम विश्लेषण करें तो पाएंगे कि सभी के पास स्वेच्छा होनी चाहिए। परंतु हमारा व्यक्तिगत अनुभव यह कहता है कि स्वेच्छा से किसी कार्य को करने के बाद वास्तव में जो घटित होता है, उस पर किसी का नियंत्रण नहीं होता।

वास्तव में होता यह है:

1. कई बार व्यक्ति को वह मिल जाता है जो वह चाहता है।
2. कई बार व्यक्ति को वह नहीं मिलता जिसकी वह आशा करता है।
3. कई बार व्यक्ति को उसकी अपेक्षा से अधिक मिलता है – अच्छे के लिए, अथवा बुरे के लिए।

यह जानना महत्वपूर्ण है कि यह बात सामान्य रूप से सभी पर लागू होती है, भले ही वह एक सामान्य व्यक्ति हो अथवा कोई अपराधी। किसी अपराधी के पास भी किसी दूसरे व्यक्ति जितनी ही स्वेच्छा होती है। वह भी दूसरों की भाँति यह जानने में असमर्थ है कि वास्तव में स्वेच्छा से कुछ करने के बाद क्या होने वाला है।

The_Buddha_Sword_Hindi_FB_2016.indd 13 4/7/2016 12:38:31 PM

अतः यद्यपि हमारे पास पूर्ण स्वेच्छा है और किसी परिस्थिति में हम जो भी करना चाहें, कर सकते हैं, समाज तो केवल उसका परिणाम देखेगा – उपरोक्त तीन उदाहरणों में से किसी एक को व्यक्ति की करनी माना जाएगा। वास्तव में जो भी हुआ है, उसके आधार पर समाज उस करनी को अच्छा या बुरा ठहराएगा। समाज में प्रचलित नियमों तथा कानूनों के अनुसार समाज संबद्ध व्यक्ति को उसकी करनी के अनुसार पुरस्कृत अथवा दंडित करेगा।

पुरस्कार से तात्पर्य उस क्षण की खुशी, तथा दंड से अभिप्राय उस क्षण की पीड़ा है। यह एक ऐसा तथ्य है जिसे संबद्ध व्यक्ति द्वारा समाज में रहने के लिए मान लेना बहुत आवश्यक है।

स्पष्ट रूप से दैनिक जीवन को हम इसी रूप में जानते हैं, दिन प्रतिदिन, विभिन्न परिस्थितियों, विभिन्न कार्यकलापों के उपरांत उस समय समाज के द्वारा पुरस्कार अथवा दंड।

अतः दो चीज़ें स्पष्ट हो गई हैं:

1. किसी भी परिस्थिति में अपनी इच्छानुसार कुछ भी करने के लिए प्रत्येक मनुष्य के पास स्वेच्छा होती है।
2. व्यावहारिक जीवन में यह स्वेच्छा बिल्कुल निरर्थक रहती है, क्योंकि 'हमारी' करनी के परिणामों पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं है।

.

The_Buddha_Sword_Hindi_FB_2016.indd 14 4/7/2016 12:38:31 PM

स्वेच्छा का महत्व – सिद्धांत रूप में

यद्यपि हम यह जान गए हैं कि व्यावहारिक रूप में "स्वेच्छा" की बात बिल्कुल निरर्थक है परन्तु सैद्धांतिक रूप में इसके महत्व के बारे में जानना काफ़ी रोचक होगा।

आखिर "स्वेच्छा" का आधार क्या है? मैं किस आधार पर यह निर्णय लूँ कि किसी परिस्थिति में मेरी इच्छानुसार कुछ प्राप्त करने के लिए मुझे क्या करना होगा और एक अपराधी किस आधार पर कुछ करने का निर्णय लेता है?

यदि आप इस प्रश्न पर गंभीरता से विचार करें तो यह पायेंगे कि प्रत्येक मामले में "स्वेच्छा" दो चीज़ों पर आधारित होती है – आपके जीन तत्व और आपकी परिस्थितियाँ।

आपका अपने माता पिता की संतान होने पर कोई नियंत्रण नहीं था। इसीलिए आपका अपने जीन तत्व पर भी नियंत्रण नहीं था।

The_Buddha_Sword_Hindi_FB_2016.indd 17 4/7/2016 12:38:31 PM

अनेक अनुसंधानों से जीन तत्व के शक्तिशाली होने की बात सामने आई है। किसी व्यक्ति का दयालु होना या न होना उसके जीन तत्व पर निर्भर करता है। इसी प्रकार ज़मीन पर चलती चीटियों के समूह पर पांव रखना या ना रखना भी उसके जीन तत्व पर निर्भर करता है।

वास्तव में एक नयी रिपोर्ट के अनुसार कोई व्यक्ति अपने पति/पत्नी के प्रति वफादार है या नहीं, यह भी उसके जीन तत्व पर निर्भर करता है। इस प्रकार जीन तत्व एक अत्यंत शक्तिशाली तत्व है।

इसी प्रकार इस तथाकथित "स्वेच्छा" का दूसरा आधार हमारी परिस्थितियों के अनुसार हमारा अनुकूलन है। जिस प्रकार अपने किसी विशेष माता पिता की संतान होने पर मेरा नियंत्रण नहीं था (इस प्रकार जीन तत्व पर भी मेरा नियंत्रण नहीं था), उसी प्रकार विशेष भौगोलिक और विशेष रूप से किसी सामाजिक वातावरण – उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग या निम्न वर्ग में अपने किसी विशेष माता पिता की संतान होने पर भी मेरा कोई नियंत्रण नहीं था। इस प्रकार मैं आज जो भी हूँ, वह मेरे पैदा होने के पहले दिन से ही घर, समाज, स्कूल और कॉलेज तथा चर्च अथवा मंदिर की परिस्थितियों के अनुसार अनुकूलन की बौछार के आधार पर बना हूँ। यह अच्छा है, वह बुरा है, हमें यह करना चाहिए या वह नहीं करना चाहिए या ईश्वर हमें दंड देगा, इस प्रकार की अनेक बातें हमारी परिस्थितियों के अनुसार हमारी मानसिकता को तैयार करती हैं।

The_Buddha_Sword_Hindi_FB_2016.indd 18 4/7/2016 12:38:31 PM

परिस्थितियों के अनुसार मानसिकता का विकास इस बात पर निर्भर करता है कि हमें क्या बताया जाता है, हम क्या पढ़ते हैं और क्या देखते हैं। वास्तव में जीन तत्व तो कम या ज्यादा एक स्थायी तत्व है परन्तु परिस्थितियों के अनुसार हमारी मानसिकता निरंतर बदलती रहती है। नयी परिस्थितियाँ हमारी वर्तमान परिस्थितियों पर आधारित मानसिकता में थोड़ा बदलाव ला सकती हैं या उनमें कुछ सुधार ला सकती हैं अथवा कई बार पुरानी मानसिकता को पूरी तरह ही रूपांतरित कर सकती हैं।

इस प्रकार एक आम आदमी और एक अपराधी किसी विशेष परिस्थिति में जो भी करने का निर्णय लेता है वह जीन तत्व और परिस्थितियों के अनुसार मानसिकता पर आधारित होता है और इन दोनों पर किसी का कोई नियंत्रण नहीं होता। अतः कौन हमारे जीन तत्व या मानसिकता के लिए जिम्मेदार है?

क्या यह सच नहीं है कि यह दोनों तत्व किसी उच्च शक्ति द्वारा निर्धारित किये गए थे। यदि हम इस बात को स्वीकार करते हैं तो यह भी स्पष्ट हो जाता है कि किसी विशेष समय में कोई व्यक्ति जो भी करता है वह किसी उच्च शक्ति द्वारा पूर्वनिर्धारित होता है जिसे कुछ लोग ईश्वर का नाम देते हैं। कोई भी व्यक्ति वह काम नहीं कर सकता जो ईश्वर नहीं चाहता।

The_Buddha_Sword_Hindi_FB_2016.indd 19 4/7/2016 12:38:31 PM

इसका अर्थ स्पष्ट है कि कोई भी, चाहे वह सामान्य व्यक्ति हो अथवा कोई मनोरोगी हो, कोई भी ऐसा काम नहीं करेगा जिसके लिए उसे भगवान से डर लगे और यदि उसे भगवान से डरने की जरूरत नहीं है तो निश्चित रूप से अपने जन्मदाता को प्रेम करने से कोई उसे रोक नहीं सकता।

आप पूछेंगे कि यदि सब कुछ भगवान की इच्छा से होता है तो मशीनगन उठा कर बीस लोगों को मारने से मुझे कौन रोकता है? इसका स्पष्ट उत्तर है कि यदि ये आपके स्वभाव में (जीन तत्व और परिस्थिति अनुसार आपकी मानसिकता) नहीं है तो पहले तो आप ऐसा करेंगे ही नहीं। दूसरे यदि आप ऐसा करते हैं तो आप समाज के प्रति ज़िम्मेदारी से बच नहीं सकते क्योंकि समाज इसको 'आपका' काम बताते हुए आपको दण्डित करेगा।

जीवन की राह में प्रत्येक व्यक्ति जिस समाज में रहता है, उसके प्रति वह उत्तरदायी होता है और उसे हर मामले में उसका निर्णय स्वीकार करना होगा। इसका तात्पर्य है कि कभी उसे खुशी मिलेगी और कभी तकलीफ।

यदि किसी व्यक्ति को यह जानते हुए तकलीफ से गुज़रना होता है कि यह सब ईश्वर की इच्छा से हो रहा है तो उसे इस मामले में अपने आप को दोषी मानते हुए शर्मसार होने की आवश्यकता नहीं है।

The_Buddha_Sword_Hindi_FB_2016.indd 20 4/7/2016 12:38:31 PM

इस विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि किसी का भी इस बात पर नियंत्रण नहीं होता कि आने वाले क्षण खुशी लायेंगे अथवा तकलीफ। इस बात को हमें स्वीकार करना होगा। परन्तु जो भी हो रहा है, वह ईश्वर की इच्छा से अथवा अलौकिक शक्ति के अनुसार हो रहा है और किसी व्यक्ति का इसमें कोई हाथ नहीं है – यह स्वीकार करने से अच्छा कार्य होने से किसी व्यक्ति को गर्व अथवा अहंकार और तकलीफ के समय दोषी या शर्मसार महसूस करने की कोई आवश्यकता नहीं रह जाती।

इसी प्रकार यदि सब कुछ अलौकिक नियमों के अनुसार घटित होता है तो किसी 'अन्य' को किसी कार्य के लिए 'घृणा करने' अथवा 'दोषी ठहराने' की कोई आवश्यकता नहीं है भले ही वह 'अन्य' कोई मनोरोगी ही क्यों न हो।

यही हमारा दैनिक जीवन है। हम में से प्रत्येक को अलौकिक नियमों अथवा ईश्वर की इच्छा के अनुसार अपने आसपास की परिस्थितियों में जीवन व्यतीत करने को विवश होना पड़ता है।

The_Buddha_Sword_Hindi_FB_2016.indd 21 4/7/2016 12:38:31 PM